राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

संस्कृत-रूपान्तरण-कर्त्ता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्ता
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वर स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरीजी महाराज
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

(गताङ्कादग्रे)

किन्तु हा ! गो - वधो नहि, रोध्यते पूर्णरूपेण प्रशासन् ।
गोवत्सल-श्रीकृष्ण - जन्मभूमौ किं गोवधः प्रशस्तोऽत्र ? ॥29॥

किन्तु हा ! दुःख है, प्रशासन द्वारा गोवध पूर्ण रूप में बन्द नहीं किया जाता, क्या गोवत्सल श्रीकृष्ण की जन्मभूमि में यहाँ गोवध प्रशंसनीय है ?

But it is sad that the administration did not completely stop killing of the cows. Is it commendable to slaughter cows in the birthplace of Krishna? |29|

गौः किं नहि राष्ट्रपशुः समुद्घोष्यते प्रशासनेन सद्योऽत्र ।
विना गोसेवां कृष्ण , आशु नहि प्रसीदति कदापि स्वभक्ते ॥30॥

यहाँ प्रशासन के द्वारा गौ राष्ट्रपशु क्यों नहीं, तत्काल उद्घोषित की जाती है ? बिना गोसेवा के किए अपने भक्तों पर श्रीकृष्ण कभी शीघ्र प्रसन्न नहीं होते हैं ।

Why shouldn't the Administration immediately pronounce cow a national animal? Krishna would not be quickly satisfied with his devotees if they don't take care of the cow.

गो-दानेन तु पुण्यं, निस्सीमं मिलतीति शास्त्रेषु कथितम् ।
गौरस्ति कामधेनुः, सुसेविता याहि सर्वान् कामान् दोग्धि ॥31॥

गोदान करने से तो निस्सीम पुण्य मिलता है, यह बात शास्त्रों में कही गई है । गौ तो कामधेनु है जो अच्छी तरह सेवा की हुई सभी कामनाओं को पूर्ण कर देती है।

It is written in the scriptures that one gets endless merits by gifting the cow. If properly taken care of, any cow can be Kamadenu and fulfil all the wishes.

गो - सेवां परित्यज्य, कुक्कुरान् सेवमानाः सगर्वमत्र ।
कीदृक्-पुण्यमर्जन्ति ? गुरुदेव ! भवानेव निगदतु साम्प्रतम् ॥32॥

गो - सेवा करना छोड़कर गर्व के साथ यहाँ कुत्तों की सेवा करते हुए लोग कैसा पुण्य अर्जित करते हैं ? हे गुरुदेव ! आप ही अब बताइए।

How will the people here, who instead of serving the cow but proudly serving the dog get any merit? Oh Gurudev, do tell!

दुग्धं दधि नवनीतं, तक्रं च मिलेत् किं गो-सेवां विनाऽत्र ? ।
एतदनुपलब्धिर्हा ! सारोग्यं सुदीर्घ - जीवनं निरुणद्धि ॥33॥

दूध दही मक्खन और छाछ क्या यहाँ गोसेवा किए बिना मिल जाए ? इनका प्राप्त न होना तो आरोग्य सहित सुदीर्घ जीवन को ही रोक देता है ।

Is it possible to get milk, curd and buttermilk without serving the cow? But without them, it is not possible to live a long healthy life. |33|

नाद्य गृहे गृहेऽधुना, दधि - मन्थनः घोषः श्रोतुमुपलभ्यते ।
बालाः पृच्छन्ति यदा, नवनीत - परिचयं हृदतीव तप्यते ॥34॥

आज घर घर में अब दही मथने की आवाज सुनने के लिए नहीं मिलती । जब बच्चे- बच्चियाँ नवनीत (मक्खन) का परिचय पूछती हैं तो हृदय बहुत सन्तप्त होता है ।

Today, it is not possible to hear the noise of making buttermilk. My heart pains me when the children ask how the butter is made.

कृष्णोऽपि यद्यवतीर्य, नवनीतं स्वं याचेत बालः क्वचित् ।
तर्हि तस्यापीच्छेय - मिह पूरयितुं न शक्येत कदापि हा ! ॥35॥

बालकृष्ण भी यदि अवतार लेकर कहीं अपना प्रिय मक्खन माँगे तो उनकी भी यह इच्छा यहाँ कभी नहीं पूरी की जा सके, हा ! दुःख है ।

It's a pity that if baby Krishna is born and if he asks for his favourite butter, here his desire will be unfulfilled.

(क्रमशः)